स्नातकोत्तर कार्यक्रम
समाज"ाास्त्र **(MASY)**

Objectives:

Of the various social sciences, sociology seems to be the youngest. It is gradually developing. Still it has remarkable progress. Its uses are recognized widely today. In modern times, there is a growing realization of the importance of the scientific study of social phenomena .Sociology studies society in a scientific way. Before the emergence of sociology, there was no systematic and scientific attempt to study human society with all its complexities. Sociology has made it possible to study society in a scientific manner. This scientific knowledge about human society is needed in order to achieve progress in various fields.

Sociology throws more light on the social nature of man. Sociology evolves deep into the social nature of man. It tells us why man is a social animal, why he lives in groups, communities and societies. It examines the relationship between individual and society, the impact of society on man and other matters. Sociology has drawn our attention to the intrinsic worth and dignity of man. Sociology has been greatly responsible in changing our attitudes towards fellow human beings. It has made people to become too lenient and patient towards others. It has minimized the mental distance and reduced the gap between different peoples and communities.

Sociology is of great practical help in the sense; it keeps us up-to date on modern social situations and developments. Sociology makes us to become more alert towards the changes and developments that take place around us. As a result, we come to know about our changed roles and expectations and responsibilities.

Sociology asks the big questions and examines connections within society. We live in a world where big changes happen on a daily basis and by studying Sociology we can start to explore why some of these changes take place and what the implications are for the rest of our world. Studying Sociology at UPRTOU provides the space to approach these wider issues. The course allows students to ask and answer these big questions in an open and appreciative environment.

We live in an ever changing society where change is possible and is happening all around us every day. This makes it more important than ever to study Sociology. By the end of this course, you should be able :

1. To understand the basic concepts, language, and theories of sociology.
2. To become familiar with the strategies sociologists use to study human society.
3. To describe and explain major features of your own society, beginning with the institutions that are closest to your own experience.
4. To understand the social dimensions of inequality and difference.
5. To decide whether you have an interest in further coursework in sociology and if so, to provide you a solid basis for further study.

SOCIOLOGY (समाज"ाास्त्र) (MASY)

Year/वर्ष	Paper No./ पेपर नं0	Course Code/ पाठ्य क्रम कोड	Title of Course/ पाठ्यक्रम का शीर्षक	Credits/ क्रेडिट	Compulsory /Elective अनिवार्य / वैकल्पिक
Compulsory Core Course/ विषय केन्द्रित अनिवार्य पाठ्यक्रम					
प्रथम वर्ष	5045	MASY-01	भारतीय सामाजिक विचारधारा	8	अनिवार्य
	5046	MASY-02	पाश्चात्य सामाजिक विचारधारा	8	अनिवार्य
	5047	MASY-03	सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी	8	अनिवार्य
	Discipline-Centric Elective Course /विषय केन्द्रित वैकल्पिक पाठ्यक्रम				
	5048 or 5049	MASY-04 or MASY-05	भारतीय समाज निरन्तरता एवं परिवर्तन अथवा विकास का समाजशास्त्र	8 or 8	वैकल्पिक
प्रथम वर्ष का कुल क्रेडिट				**40**	
Compulsory Core Course/ विषय केन्द्रित अनिवार्य पाठ्यक्रम					
द्वितीय वर्ष	5050	MASY-06	सामाजिक नियोजन एवं विकास : भारतीय परिपेक्ष्य	8	अनिवार्य
	5051	MASY-07	उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त	8	अनिवार्य
	5052	MASY-08	भारत में ग्रामीण समाज	8	अनिवार्य
	Discipline Centric Elective Course/ विषय केन्द्रित वैकल्पिक पाठ्यक्रम				
	5053 or 5054	MASY-09 or MASY-10	भारत में नगरीय समाज अथवा अपराध शास्त्र एवं दण्डशास्त्र	8 or 8	वैकल्पिक
				कुल योग – 80	

MASY-01

खण्ड–01 : भारत में समाजशास्त्र का उद्‌भव एवं विकास

इकाई–1 भारत में समाजशास्त्रीय चिन्तन की सामाजिक पृष्ठभूमि

इकाई–2 भारत में समाजशास्त्रीय चिन्तन की वैचारिक पृष्ठ भूमि एवं विकास

इकाई–3 भारत में समाजशास्त्र के संस्थापक

इकाई–4 भारत में समाजशास्त्रीय विशलेषण के उपगम

इकाई–5 भारत में समाजशास्त्र के अध्ययन के केन्द्रोय मुद्‌दे एवं क्षेत्रीय अध्ययन

इकाई–6 भारतीय समाजशास्त्र एवं नव समाजशास्त्रीय विमर्श

खण्ड–02 : मनु और कौटिल्य

इकाई–7 मनु एवं मनु–स्मृति : समकालीन परिदृश्य

इकाई–8 मनु की सामाजिक विचारधारा

इकाई–9 मनु के राजनीतिक विचार

इकाई–10 मनु के व्यवहार निरूपण सम्बन्धी विचार

इकाई–11 कौटिल्य अर्थशास्त्र तथा चार विधायें

इकाई–12 कौटिल्य के राज्य विषयक विचार

इकाई–13 कौटिल्य की प्रशासनिक तथा बाह्य नीति

खण्ड–03 : श्री अरविन्द

इकाई–14 श्री अरविन्द घोष : जीवन वृत्त, कृतियॉ और मुख विचार

इकाई–15 योग

इकाई–16 मानव विकास की प्रक्रिया

इकाई–17 सामाजिक विकास के निर्धारक तत्व I: संस्कृति और नैतिकता

इकाई–18 सामाजिक विकास के निर्धारक तत्व II: शिक्षा और धर्म

इकाई–19 राष्ट्रीयता और मानव एकता

खण्ड–04 : महात्मा गॉधी

इकाई–20 गॉधी जी का आध्यात्मिक दर्शन

इकाई–21 महात्मा गॉधी का सामाजिक चिन्तन

इकाई–22 गॉधी के आर्थिक विचार

इकाई–23 गॉधी जी का राजनीतिक दर्शन

खण्ड–05 : जय प्रकाश नारायण व आचार्य नरेन्द्र देव

इकाई–24 समाज और सर्वोदय

इकाई–25 सम्पूर्ण क्रान्ति

इकाई–26 लोकतन्त्र

इकाई–27 आचार्य नरेन्द्र देव का समाजवाद

इकाई–28 आवार्य नरेन्द्र देव की शैक्षणिक विचारधारा

इकाई–29 आचार्य नरेन्द्र देव की संस्कृति की अवधारणा

MASY-02

पाश्चात्य सामाजिक विचारधारा

खण्ड–1 पश्चिम में समाजशास्त्र का उद्‌भव एवं विकास कोंत के विशेष सन्दर्भ में –

इकाई–1 समाजशास्त्र के उदय की सामाजिक पृष्ठभूमि

इकाई–2 समाजशास्त्र की उदय की बौद्धिक पृष्ठभूमि

इकाई–3 अगस्त कोंत : जीवन पश्चिम एवं कृतियॉ

इकाई–4 कोंत का विज्ञानों का वर्गीकरण एवं पदानुक्रम तथा त्रिन्स्तरीय सोपानों का सिद्धान्त

इकाई–5 कोंत के प्रत्यक्षवाद एवं सामाजिक स्थिति विज्ञान तथा सामाजिक गतिविज्ञान

खण्ड–2 हरबट स्पेन्सर तथा विलफ्रेड परेटो

इकाई–6 स्पेन्सर का उद्‌विकास सम्बन्धी विचार

इकाई–7 परेन्टो की तार्किक और अतार्किक क्रियाओं की अवधारण

इकाई–8 परेटो की अवशिष्ट एवं भ्रान्त तर्क की अवधारणा

इकाई–9 परेटो का अभिजात वर्ग के परिभ्रमण का सिद्धान्त

खण्ड–3 कार्ल मार्क्स

इकाई–10 द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

इकाई–11 ऐतिहासिक भैतिकवाद

इकाई–12 वर्ग और वर्ग संघर्ष

इकाई–13 सामाजिक क्रान्ति का सिद्धान्त

खण्ड–4 दुर्खीम

इकाई–14 समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम : सामाजिक तथ्य

इकाई–15 समाज में श्रम विभाजन

इकाई–16 धर्म तथा समाज

इकाई–17 आत्महत्या

खण्ड–5 मैक्स वेबर

इकाई–18 वेबर का पद्धतिशास्त्र

इकाई–19 वेबर के आदर्श प्रारूप की आख्या

इकाई–20 धर्म और अर्थ व्यवस्था

इकाई–21 शक्ति और सत्ता

इकाई–22 वेबर के बाद का समाजशास्त्र

MASY-03

सामाजिक अनुसंधान

खण्ड–1 सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति तथा विषय क्षेत्र

इकाई–1 सामाजिक अनुसंधान की अवधारणा

इकाई–2 सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति

इकाई–3 सामाजिक अनुसंधान के प्रमुख चरण

इकाई–4 सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र व सामाजिक अनुसंधान में व्याप्त कठिनाईयॉ

खण्ड–2 शोध अभिकल्प

इकाई–5 शोध अभिकल्प : एक परिचयात्मक अध्ययन

इकाई–6 शोध अभिकल्प के प्रकार

इकाई– 7 प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प

इकाई–8 प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प के तार्किक आधार एवं प्रकार

इकाई–9 प्रयोगात्मक शोध के लिए कुछ मूल्यवान अथवा समृद्ध शोध अभिकल्प निर्देश

खण्ड–3 ऑकडा संकलन की प्रविधियॉ

इकाई–10 अवलोकन

इकाई–11 साक्षात्कार

इकाई–12 अनुसूची

इकाई–13 प्रश्नावली

इकाई–14 एकल अध्ययन (वैयक्तिक अध्ययन) पद्धति

खण्ड–4 निदर्शन

अनुमापन विधियॉ तथा समाजमिति

इकाई–15 निदर्शन

इकाई–16 निदर्शन के प्रकार, निदर्शन की समस्यायें एवं उनके उपाय

इकाई–17 अनुमापन विधियॉ

इकाई–18 समाजमिति

खण्ड–5 सामाजिक अनुसंधान में सांख्यिकी का प्रयोग

सामाजिक अनुसंधान में सांख्यिकी का प्रयोग

इकाई–19 सांख्यिकी : एक परिचय

इकाई–20 तथ्यों का वर्गीकरण व सारणीकरण

इकाई–21 सामान्तर मध्य, मध्यिका तथा बहुलक

इकाई–22 माध्य विचलन व मानक विचलन

इकाई–23 सह–सम्बन्ध

MASY-04

भारतीय समाज : निरन्तरता एवं परिवर्तन

खण्ड–01 हिन्दू समाज के दार्शनिक आधार

इकाई–1 धर्म एवं पुरूषार्थ

इकाई–2 वर्णाश्रम व्यवस्था एवं संस्कार

इकाई–3 कर्म एवं पुर्नजन्म का सिद्धान्त

इकाई–4 हिन्दुत्व की मान्यताएँ एवं अनेकता में एकता

खण्ड–02 विवाह एवं परिवार

इकाई–5 हिन्दू विवाह एवं ततसम्बन्धी सामाजिक विधान

इकाई–6 मुस्लिम–इसाई और जनजाति विवाह एवं परिवार

इकाई–7 संयुक्त परिवार : संरचना, प्रकार्य , उपादेयता परिवर्तन एवं कारक

इकाई–8 विवाह एवं परिवार में परिवर्तन

खण्ड–03 स्तरी व्यवस्था : वर्ण जाति एवं वर्ग

इकाई–9 वर्ण, अर्थ, अवधारणा, उत्पत्ति

इकाई–10 जाति–अर्थ,अवधारणा, उत्पत्ति, प्रकार्य, दुष्कार्य व भविष्य

इकाई–11 संरचना–अवधारणा, विशेषतायें व भारत मे उदय व विकास

इकाई–12 वर्ण, जाति, उपजाति वर्ग में अन्तर व जाति व वर्ग के मध्य अन्त : क्रियात्मक सम्बन्ध

खण्ड–04 इस्लाम एवं ईसाईयत तथा सुधार सम्बन्धी आन्दोलन

इकाई–13 इस्लाम का प्रभाव तथा पारस्परिकता

इकाई–14 ईसाईयत का प्रभाव तथा पारस्परिकता

इकाई–15 सुधार सम्बन्धी सामाजिक आन्दोलन एवं उनका प्रभाव

इकाई–16 सुधार संम्बन्धी सामाजिक आन्दोलन एवं उनका प्रभाव

खण्ड–05 भारतीय समाज में निरन्तरता एवं परिवर्तन

इकाई–17 संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण तथा संस्थागत परिवर्तन

इकाई–18 नगरी करण एवं औद्योगीकरण का सामाजिक प्रभाव

इकाई–19 उदारीकरण एवं भूमण्डलीकरण के सामाजिक सांस्कृतिक परिणाम

इकाई–20 भारतीय समाज में आधुनिकीकरण : परमपरा एवं आधुनिकता

MASY-05

विकास का समाजशास्त्र

खण्ड–01 सामाजिक परिवर्तन एवं विकास

इकाई–1 सामाजिक परिवर्तन, उद्विकास प्रगति एवं विकास

इकाई–2 अर्द्धविकास, विकास एवं स्थिर विकास

इकाई–3 विकास के सिद्धान्त

इकाई–4 विकास के मॉडल

खण्ड–02 आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन

इकाई–5 आर्थिक विकास : (अवधारणा पूर्वपेक्षायं एवं स्तर)

इकाई–6 सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक विकास (कार्यकरण सम्बन्ध एवं आर्थिक विकास के सामाजिक संस्कृतिक अवरोध)

इकाई–7 आर्थिक विकास की सामाजिक, संस्कृतिक एवं पर्यावरण समस्यायें एवं परिणाम

इकाई–8 उदारीकरण एवं वैश्वीकरण (अवधारणा एवं आर्थिक परिणाम)

खण्ड–03 सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं

इकाई–9 नगरीकरण एवं औद्योगीकरण

इकाई–10 पश्चिमीकरण

इकाई–11 आधुनिकीकरण एवं उत्तर आधुनिकीकरण

इकाई–12 आधुनिकीकरण एवं विकास

खण्ड–04 विकसित एवं विकासशील समाज

इकाई–13 विकसित एवं विकासशील समाज

इकाई–14 विकसित व विकासशील समाज में सम्बन्ध

इकाई–15 विकासशील समाजों की समस्यायें

इकाई–16 परम्परा आधुनिक एवं विकास

खण्ड–05 शिक्षा, जनसंचार एवं विकास

इकाई–17 शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन एवं विकास

इकाई–18 जनसंचार एवं विकास

इकाई–19 जनसंचार वैश्वीकरण एवं उदारीकरण

इकाई–20 शिक्षा, जनसंचार एवं विकास का मिथक एवं वास्तविकता

MASY-06

सामाजिक नियोजन एवं विकास : भारतीय परिप्रेक्ष्य

खण्ड–01 सामाजिक नियोजन एवं विकास

इकाई–1 सामाजिक नियोजन का अर्थ एवं परिभाषा

इकाई–2 सामाजिक नियोजन की अवधारणा का उद्भव एवं विकास

इकाई–3 सामाजिक नियोजन के उद्देश्य एवं भरण

इकाई–4 नियोजन एवं विकास का सम्बन्ध

खण्ड–02 सामाजिक नियोजन के प्रकार

इकाई–5 सम्पूर्ण नियोजन

इकाई–6 प्रजातान्त्रिक नियोजन

इकाई–7 समाजवादी नियोजन

इकाई–8 नियोजन सम्बन्धी भारतीय मत

खण्ड–03 कल्याणकारी राज्य

इकाई–9 कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का उद्भव एवं विकास

इकाई–10 अनुसूचित जनजातिः समस्यायें एवं कल्याणकारी योजनाएँ

इकाई–11 अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछडे वर्गः सामान्य एवं कल्याणकारी योजनाएँ

इकाई–12 कमजोर वर्गः महिला एवं बाल विकासः समस्यायें एवं कल्याणकारी योजनाएँ

खण्ड–04 भारत में विकास योजनाएँ

इकाई–13 सामुदायिक विकास कार्यक्रम

इकाई–14 समन्वित ग्रामीण विकास योजना

इकाई–15 स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना

इकाई–16 सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

खण्ड–05 भारत में नीति नियोजन एवं विकास

इकाई–17 नीति : अवधारणा, अर्थ एवं प्रकार

इकाई–18 भारत की आर्थिक नीतिः स्वतन्त्रता प्राप्ति से वर्तमान तक

इकाई–19 संस्कृति, नीति नियोजन एवं विकास

इकाई–20 सामाजिक नीति एवं जीवन की गुणवत्ता

MASY-07

उच्चतर सामाजशास्त्रीय सिद्धान्त

खण्ड–01 समाजशास्त्रीय सिद्धान्त : सामाजिक संरचना,संरचनावाद एवं उत्तर संरचनावाद

इकाई–1 समाजशास्त्रीय सिद्धान्त की अवधारणा, तथ्य एवं सिद्धान्त

इकाई–2 सामाजिक संरचना की अवधारणा, मूलभूत प्रत्यय, नाडेल एवम पारसन्स के विशेष सन्दर्भ में

इकाई–3 संरचानावाद का सम्प्रत्यय, लबी स्ट्रास का संरचना वादी विशलेषण

इकाई–4 उत्तर संरचनावाद की अवधारणा, संरचना वाद एवं उत्तरसंरचना वाद में अन्तर

इकाई–5 संरचनावाद एवं उत्तरसंरचना वाद की समकालीन प्रासांगिकता समाजशास्त्रीय मूल्यांकन

खण्ड–02 संरचनात्मक प्रकार्यवाद

इकाई–1 प्रकार्यवाद की अवधारणा, प्रकार्य के तत्व

इकाई–2 प्रकार्यवाद एतिहासिक सन्दर्भ में मलिनोवस्की एवं रेडकिल्फ ब्राउन का सिद्धान्त

इकाई–3 प्रकार्यवाद मर्टन के सन्दर्भ में : प्रकार्य , अकार्य, प्रच्छन्न एवं प्रकट प्रकार्य, मर्टन का प्रकार्यात्मक प्रारूप (पैराडायिम)

इकाई–4 प्रकार्यवाद पार्सन्स के सन्दर्भ में–पारसन्स को प्रतिमान चर, AGIL प्रारूप

इकाई–5 मर्टन एवं पारसंस के प्रकायत्मक प्रत्यों को तुलनात्मक मूल्यांकन तथा नव प्रकार्यवाद : जे0 एलेक्जेन्डर के विचार एवं समालोचना

खण्ड–03 संघर्ष एवं अलोचनात्मक सिद्धान्त

इकाई–1 संघर्ष की समाजशास्त्रीय अवधारणा, समालोचनात्मक सिद्धान्त का प्रत्यय एवं स्वरूप

इकाई–2 संघर्ष सिद्धान्त का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, कार्लमार्क्स के विचार एवं समकालीन प्रासंगिकता

इकाई–3 संघर्ष की प्रकार्यात्मक्ता कोजर के सन्दर्भ में

इकाई–4 औद्योगिक समाज में संघर्ष को स्वरूप–डेहरेन्डॉर्फ का विश्लेषण

इकाई–5 आलोचना सिद्धान्त का अविभार : होरखाइमर का मत, हैबरमास के विचार एवं प्रसांगिकता

खण्ड–04 सांकेतिक अंतः क्रियावाद, घटना विज्ञान एवं लोकविधि विज्ञान

इकाई–1 सांकेतिक अन्त : क्रियावाद–प्रत्यय एवं परिभाषा, जी0 एच0 मीड का सिद्धान्त

इकाई–2 सांकेतिक अन्त : क्रियावाद– एच0 व्लूमर के सन्दर्भ में

इकाई–3 विनिमय सिद्धान्त : प्रत्यय, जार्ज होमन्स एवं पीटर एम0 ब्लाउ का सिद्धान्त

इकाई–4 घटना क्रिया विज्ञान : परिभाषा, प्रत्यय एवं प्रकृति। अलफ्रेड शुत्ज एवं इरविन गॉफमैन के विचार

इकाई–5 लोकविधि विज्ञान का प्रत्यय, एच0 गारफिकेल का सिद्धान्त

खण्ड–05 ज्ञान का समाजशास्त्र एवं उत्तर आधुनिकता वाद

इकाई–1 ज्ञान के समाजशास्त्र की अवधारणा , कार्ल मनहाइम का प्रस्तुतीकरण, कार्ल पोपर का समालोचनात्मक पक्ष

इकाई–2 उत्तर आधुनिकता : प्रत्यय एवं विविध स्वरूप, आधुनिकता एवं उत्तर–आधुनिकता में अन्तर

इकाई–3 मिशेल फूको की शक्ति एवं ज्ञान सम्बन्धी विचार की समालोचना

इकाई–4 उत्तर–आधुनिकता एवं नारीवादी विमश

इकाई–5 एन्थनी गिडेन्स, बाडूयू एवं जैक्स देरिदा के उत्तर आधुनिक्ता सम्बन्धी विमर्श

MASY-08

भारत में ग्रामीण समाज

खण्ड–1 ग्रामीण सामाजिक संरचना

इकाई–1 भारतीय ग्रामीण संरचना की विशेषताएँ : आधुनिक स्वरूप

इकाई–2 कृषक (Peasant) एवं खेतिहर (Agrarian) समाज की प्रमुख विशेषताएँ

इकाई–3 लोक संस्कृति, लघु एवं बृहद परम्परा

इकाई–4 ग्रामीण समाज में सर्वभौमिकरण एवं स्थानीकरण की प्रक्रिया

इकाई–5 ग्रामीण सामाजिक संरचना एवं आधुनिक परिवर्तित प्रतिमान

खण्ड–2 ग्रामीण सामाजिक संस्थायें

इकाई–1 प्रमुख ग्रामीण संस्थायें, परिवार जाति, ग्राम पंचायत एवं जजमानी व्यवस्था

इकाई–2 ग्रामीण शक्ति– संरचना, प्रभुजाति एवं ग्रामीण गुट

इकाई–3 नवग्रामीण अभिजन, जातीयता और जतिवाद

इकाई–4 ग्रामीण गतिशीलता एवं ग्रामीण नेतृत्व के उभरते प्रतिमान

इकाई–5 ग्रामीण जीवन में धर्म का प्रकार्यात्मक पक्ष एवं आधुनिक परिवर्तन

खण्ड–3 कृषकीय सम्बन्ध एवं ग्रामीण उत्पादन

इकाई–1 उत्पादन की प्रणालियॉ एवं कृषक सम्बन्ध

इकाई–2 कुटीर उद्योग, भू–स्वामित्व के प्रकार एवं श्रम–सम्बन्ध

इकाई–3 भूमिहीन श्रमिक, ग्रामीण निर्धनता एवं प्रजननता

इकाई–4 भूमि सुधार के विविध प्रयास, कृषकीय विधान एवं ग्रामीण सामाजिक संरचना

इकाई–5 हरित क्रान्ति

खण्ड–4 ग्रामीण समाज में नियोजित परिवर्तन

इकाई–1 नियोजित परिवर्तन : परिभाषा एवं प्रकृति

इकाई–2 पंचायतीराज व्यवस्था एवं ग्रामीण सशक्तिकरण

इकाई–3 स्थानी स्वशासन : मिथक एवं यथार्थ

इकाई–4 ग्रामीण विकास के विविध कार्यक्रम एवं उनका मूल्यांकन

इकाई–5 ग्रामीण विकास की रणनीतियॉ

खण्ड–5 कृषक आन्दोलन एवं भूमडलीकरण

इकाई–1 भारत में प्रमुख विकास आन्दोलन

इकाई–2 भूमंडलीकरण एवं कृषि पर प्रभाव

इकाई–3 जल प्रबन्धन सिंचाई एवं कृषि

इकाई–4 ग्रामीण जीवन पर नगर एवं जनसंचार का प्रभाव

इकाई–5 ग्रामीण नगरीय सातत्य

MASY-09

भारत में नगरीय समाज

खण्ड–01 भारत में नगरीय समाज

इकाई–1 नगर की अवधारणा एवं प्रादुर्भाव

इकाई–2 नगर की विशेषतायें एवं वर्गीकरण, प्रमुख नगरीय संस्थाये

इकाई–3 नगरीय समुदाय एवं स्थानीय आयाम–पार्क,बर्गेस एवं मैकेन्जी के सिद्धान्त

इकाई–4 नगरीय एवं शहरी आयाम के रूप में समाजशास्त्रीय परम्परा

इकाई–5 सांस्कृतिक स्वरूप

खण्ड–02 भारत में नगरीय समाजशास्त्र

इकाई–1 नगरीकरण की उभरती प्रवृत्तियॉ

इकाई–2 नगरीकरण के कारक

इकाई–3 नगरीकरण के सामाजशास्त्रीय आयाम

इकाई–4 नगरीकरण के समाजिक परिणाम

इकाई–5 नगरों का भावी स्वरूप

खण्ड–03 नगरीय केन्द्रों का वर्गीकरण

इकाई–1 लघु नगर (टाउन) बडे नगर (सिटी) एवं वृहद नगर(मेगासिटीज)

इकाई–2 नगर के औद्योगिक आधार, उद्योग केन्द्रित विकास

इकाई–3 नगर के व्यवासायिक संरचना में परिर्वतन का स्वरूप

इकाई–4 व्यवसाय संरचना में परिर्वतन का सामाजिक संरचना पर प्रभाव

इकाई–5 धार्मिक नगरों का स्वरूप एवं महत्व

खण्ड–04 नगरीय,सामाजिक समस्यायं

इकाई–1 मलिन बस्तियों में वद्धि एवं पर्यावरण प्रदूषण

इकाई–2 व्यावसायिक गतिशीलता एवं पारिवारिक अस्थिरता

इकाई–3 आवास की समस्या एवं मौलिक आवश्यक्ताओं की अपर्याप्तता

इकाई–4 नगरीय निर्धनता, बेरोजगारी तथा प्रवजन

इकाई–5 नगरों में बढते अपराध की प्रकृति एवं स्वरूप

खण्ड–05 नगरीय समाजशास्त्र के सैद्धान्तिक पक्ष

इकाई–1 नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन के प्रमुख उपागम–वेबर, मम्फोर्ड एवं पार्क तथा बर्गेस के सन्दर्भ में

इकाई–2 नगर ,नगरीकरण एवं नगरवाद

इकाई–3 भारत में नगर नियोजन एवं नगरीय प्रबंधन की समस्याएँ

इकाई–4 क्षेत्रोय नियोजन तथा सामजिक एवं स्थानीय सिद्धान्तों में संबद्धता

इकाई–5 ग्रामीण–नगरीय सातत्य

MASY-10

अपराधशास्त्र एवं दण्डशास्त्र

खण्ड–01 अपराधशास्त्र : प्रकृति एव अवधारणा

इकाई–1 अपराधशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र तथा विषयवस्तु

इकाई–2 अपराध की कानूनी तथा समाजशास्त्रोय व्याख्याएँ

इकाई–3 अपराध के सामान्य कारण

इकाई–4 भारत में अपराध

खण्ड–02 अपराधशास्त्र : सम्प्रदाय एवं सिद्धान्त

इकाई–1 अपराध की शास्त्रीय एवं नव शास्त्रीय विचारधारा

इकाई–2 अपराध की वैज्ञानिक विचारधारा

इकाई–3 अपराध के जैविकीय एवं भौगोलिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त

इकाई–4 अपराध के आर्थिक सिद्धान्त

इकाई–5 अपराध का समाजशास्त्रीय तथा सांस्कृतिक सिद्धान्त

खण्ड–03 अपराध एवं उसके प्रकार

इकाई–1 संगठित अपराध

इकाई–2 साइबर अपराध

इकाई–3 भ्रष्टाचार तथा श्वेतवसन अपराध

इकाई–4 राजनीतिक अपराध कारण तथा नये अपराधी व्यक्तित्व

इकाई–5 महिलाओं के विरूद्ध अपराध

खण्ड–04 दण्डशास्त्र : सिद्धान्त एवं सम्प्रदाय

इकाई–1 भारत में दण्ड का इतिहास

इकाई–2 दण्ड के इतिहास एवं सम्प्रदाय

इकाई–3 भारत में प्राणदण्ड

खण्ड–05 बन्दीगृह, अपराध नियंत्रण एवं मानवाधिकार

इकाई–1 भारत में बन्दी गृह का उद्भव

इकाई–2 खुले बन्दीगृह, आदर्श बन्दीगृह,बाल अपराधी,सुधार संस्थायें तथा पुनर्वास

इकाई–3 अपराध नियंत्रण में अदालत (परिवीक्षा एवं पैरोल) तथा पुलिस की भूमिका

इकाई–4 मानव अधिकार एवं जेल प्रबन्ध

MASY- 12

जनांनिकी

पाठ्यक्रम :–

1 जनांनिकी परिभाषा,क्षत्र विषय सामग्री और महत्व

- जनांनिकी की परिभाषा
- जनांनिकी का क्षेत्र एवं विषय– सामग्री
- जनांनिकी का महत्व

2 भारत में जनांनिकी अध्ययन एवं शोध

- जनांनिकी का उद्विकास
- जनांनिकी का अध्ययन
- प्रमुख जनसंख्याशास्त्री एवं उनके कार्य

3 माल्थस का जनसंख्या–सि़द्धान्त एवं नव माल्थसवाद

- माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी विचारों के प्रेरक कारक
- माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त
- माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की अलोचनाएँ
- नव–माल्थसवाद

4 जनसंख्या के प्राणशास्त्रीय एवं नैसर्गिक सिद्धान्त

- माईकेल थामस सेंडलर का सिद्धान्त
- डबुल डे का आहार सिद्धान्त
- केस्टरों का जनसंख्या सिद्धान्त
- रेमण्ड पर्ल व लावेल रीड का जनसंख्या सिद्धान्त
- हरबर्ट स्पेन्सर का जनसंख्या का प्राणिशास्त्रीय सिद्धान्त
- गिनी का जैविक अवस्था का सिद्धान्त

5 जनसंख्या के सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आर्थिक सिद्धान्त

- हेनरी जार्ज का 'सामाजिक असंतुलन का सिद्धान्त '
- अरसन ड्यूमण्ट का सामाजिक केशाकर्षक शक्ति का सिद्धान्त
- फैंक फिटर का जनसंख्या का सिद्धान्त
- आर्थर हैण्डली एवं अदना वेबर का सिद्धान्त
- निटिस का जनसंख्या का सिद्धान्त
- ब्रेन्टों का जनसंख्या का सिद्धान्त
- कार्ल हेनरिक मरकर्स का सिद्धान्त

- इस्टनबर्ग का सिद्धान्त
- लीबिन्सटीन का सिद्धान्त
- ऐलक्जेण्डर मोरिस कार साउडर्ण्स का सिद्धान्त

6 अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त

- सिद्धान्त का उद्‌भव एवं विकास
- अनुकूलतम जनसंख्या के मापदण्ड
- अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की विशेषताएँ
- डाल्टन तथा राबिन्स के विचारो को तुलना
- कार साउडर्स के विचार
- अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाएँ
- अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का महत्व
- माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त से तुलना एवं श्रेष्ठता

7 जनांकिकीय परिवर्तन के सिद्धान्त

- सी.पी.ब्लेकर का जनसंख्या का सिद्धान्त
- थाम्पसन नोंटेस्टीन और बोग आदि का मत
- काउगिल द्वारा प्रस्तुत अवस्थायें
- कार्ल मार्क्स का मत

8 जनसंख्या कारक और सामाजिक परिवर्तन

- सामाजिक परिवर्तन की अवधाराणार्थ और परिभाषा
- सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ
- परिवर्तन के तीन प्रतिमान
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त और कारक
- माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त
- जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन

9 प्रजनता

- प्रजनता– अर्थ एवं परिभाषा
- जन्म सम्बन्धी समंको विलक्षणतायें
- प्रजनता के निर्धारक और प्रभावित कारने वाले कारक

10 जनसंख्या प्रक्षेपण

- जनसंख्या प्रक्षेपण की रीतियॉ और प्रकार
- जनसंख्या प्रक्षेपण के लिए सावधानियॉ एवं शर्ते
- जनसंख्या प्रक्षेपणका महत्व और सीमाये

11 जनगणना अध्ययन का महत्व

- जनगणना– परिभाषा, इतिहास तथा विशेषतायें
- जनगणना–नियोजन तथा क्षेत्र
- जनगणना कार्य– जनगणना के बाद का कार्य ,उत्तरार्द्ध
- जनगणना का महत्व

12 भारत में जनगणना

- भारत में जनगणना का इतिहास
- जनगणना अधिनियम
- 1941 की जनगणना
- 1951 की जनगणना
- 1961 की जनगणना
- 1971 की जनगणना
- 1981 की जनगणना
- 1991 की जनगणना
- 2001 की जनगणना
- 2011 की जनगणना
- भारतीय जनगणना की कमियॉ

13 भारत में जन्मदर एवं प्रजननता

- भारत सहित कुछ देशों के जनसंख्या
- विश्व के कुछ देशों की जन्मदर
- भारत में जन्मदर एवं जनसंख्या में बृद्धि दर
- भारत के विभिन्न प्रान्तों में जन्म दर
- भारत की जनसंख्या में वृद्धि तथा वृद्धि प्रतिशत
- प्रजननता सम्बन्धी समंको की प्रकृति
- भारत में शिक्षा एवं प्रजननता
- भारत में विवाह की आयु और प्रजननता
- भारत में आयु विशिष्ट प्रजननता दर
- भारत में आर्थिक स्तर के अनुसार प्रजननता

14 भारत में मृत्यु दर

- विश्व के कुछ देशों में मृत्यु– दर
- भारत में मृत्यु –दर
- भारत में शिशु मृत्यु दर और उनके कारण
- भारत में जीवन प्रत्याशा
- भारत में शिशु एवं मातृ मृत्युदर

15 भारतीय जनसंख्या : वृद्धि दर एवं प्रक्षेपण

- 1891 के पूर्व भारत की जनसंख्या (अनुमानित)
- 1891 से 1921 के मध्य भारत की जनसंख्या
- 1921 से 1961 के भारत की जनसंख्या
- 1961 से 1991 के भारत की जनसंख्या
- भारत के प्रान्तानुसार जनसंख्या में वृद्धि
- भारतीय जनसंख्या का प्रक्षेपण
- भारत की भावी जनसंख्या के अनुमान

16 भारत में जनाधिक्य की समस्या

- भारत में जनाधिक्य– निराशावादी विचारधारा, आशावादी विचारधारा
- भारत में जनाधिक्य के कारण
- भारत में जनाधिक्य के दुष्परिणाम

17 भारतीय जनसंख्या के आर्थिक पहलू

- जनसंख्या का व्यवसायिक वितरण
- भारत के विभिन्न राज्यों में कार्यशील जनसंख्या
- महिला श्रमिको का व्यवसायिक विभाजन
- भारत में बेरोजगारी
- भारतीय राष्ट्रीय आय के सात एवं उनका राष्ट्रोय आय में अंशदान
- भारत में प्रति व्यक्ति आय

18 भारतीय जनसंख्या के सामाजिक – सांस्कृतिक पहलू

- जनसंख्या का घनत्व
- भारत में जनसंख्या घनत्व में भिन्नता के कारण
- आयु और लिंग संरचना
- भारत में स्त्रियों का अनुपात कम होने के कारण
- शहरी व ग्रामीण जनसंख्या का वितरण
- भारतीय जनसंख्या के शैक्षणिक पहलू
- भारत में विभिन्न धर्मो की जनसंख्या
- भाषा के आधार पर गठन
- भारत में विवाह के समय आयु

19 जनसंख्या नीति

- जनसंख्या नीति के परिभाषा और उद्देश्य
- जनसंख्या नीति का सकारात्मक और नकारात्मक पहलू
- जनसंख्या नीति के उपागम

- जनसंख्या नीति की आवश्यकता

20 भारत की जनसंख्या नीति

- भारत में जनसंख्या नीति की आवश्यकता
- भारत के लिए उपयुक्त जनसंख्या नीति
- भारत की जनसंख्या नीति (परिवार नियोजन)
- स्वामीनाथन समिति रिपोर्ट 1994
- जनसंख्या नीति 2000
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग 2000
- राष्ट्रीय जनसंख्या स्थिरीकरण कोष
- राष्ट्रीय जनसंख्या परिषद्

21 जन्म नियंत्रण गर्भनिरोध

- गर्भ निरोध का आधुनिक आन्दोलन
- परिवार नियोजन, जन्म नियंत्रण और गर्भ–निरोध का अर्थ
- जन्म नियंत्रण की विधियॉ एवं साधन
- गर्भपात– भारत में गर्भपात तथा गर्भपात अधिनियम

22 जनसंख्या का घनत्व

- जनसंख्या के घनत्व मापने के आधार
- विश्व में जनसंख्या का घनत्व
- भारत में जनसंख्या घनत्व
- जनसंख्या के घनत्व को निर्धारित करने वाले कारक
- भारत में जनसंख्या के घनत्व को प्रवत्तियॉ
- जनसंख्या का घनत्व एवं आर्थिक विकास

23 जनसंख्या की बनावट

- जनसंख्या के संगठन के अध्ययन का महत्व
- जनसंख्या की बनावट के आधार
- जनसंख्या की बनावट के अध्ययन का महत्व

24 भारत में परिवार नियोजन

- परिवार नियोजन का अर्थ आवश्यकता एवं महत्व
- भारत में परिवार नियोजन का इतिहास
- परिवार नियोजन पर किया गया व्यय एवं कार्य
- भारत में परिवार नियोजन को प्रभावित करने वाले सामाजिक
- सांस्कृतिक कारक एवं बाधाऍ

25 भारत में परिवार नियोजन कार्यक्रम

- भारत की विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में परिवार नियोजन कार्यक्रम
- भारत में परिवार नियोजन की असफलता के कारण
- परिवार नियोजन की सफलता के लिए सुझाव

26 जन–स्वास्थ्य एवं भारत में स्वास्थ्य सेवाएँ

- स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक
- भारत में जन स्वास्थ्य तथा मृत्यु दर
- भारत में निम्न जन–स्वास्थ्य स्तर के कारण व सुधार के लिए सुझाव
- बीमारियों पर नियंत्रण
- स्वच्छता और पेयजल की व्यवस्था
- पोषण और आहार व्यवस्था
- खाद्य पदाथा में मिलावट की रोकथाम
- खाद्यान्न उत्पादन में बृद्धि तथा परिवार नियोजन कार्यक्रम
- मादक द्रव्य व्यसन और नियंत्रण
- मातृत्व एवं शिशु कल्याण सेवाएँ

27 प्रवास की समस्या

- प्रवास के प्रकार और कारण
- प्रवास के परिणाम और लाभ

28 नगरीकरण

- ग्रामीण जीवन–ग्रामों का उद्विकास
- ग्रामों के उत्पत्ति के सिद्धान्त
- गॉवों के विकास के कारण
- नगरीय जीवन–नगर का उद्विकास और विशेषताएँ
- नगरीकरण –परिभाषा विशेषताएँ तथा प्रभाव
- भारत में नगरीकरण

29 विश्व जनसंख्या

- विभिन्न स्रोतों द्वारा संकलित विश्व की जनसंख्या
- 1950 के पूर्व की विश्व की जनसंख्या
- 1650 से 1800 के मध्य की जनसंख्या
- 1800 से वर्तमान समय तक विश्व की जनसंख्या
- विश्व जनसंख्या : एक नजर में
- विश्व जनसंख्या का वितरण
- विश्व जनसंख्या के प्रतिमान

- धर्मानुसार विश्व जनसंख्या
- विश्व की जनसंख्या की वर्तमान प्रवृत्तियॉ
- विश्व जनसंख्या का बृद्धि दर क्रम
- आयु वर्गानुसार विश्व जनसंख्या
- विश्व के जीवन प्रत्याशा तथा शिशु मृत्युदर

30 जनसंख्या शिक्षा

- जनसंख्या शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा
- जनसंख्या शिक्षा के तत्व
- जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम और उद्देश्य
- जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व